ध्वस्त होइत शान्ति स्तूप

कीर्ति नारायण मिश्र

ध्वस्त होइत शान्ति स्तूप
कीर्ति नारायण मिश्र

सृष्टि सँ पूर्व विध्वंस करब कवि
कीर्ति नारायण मिश्रक
सामाजिक-राजनीतिक चेतनाक संगहि
काव्य-चेतनाक
अभिन्न अंग बनि गेल अछि।
'सीमान्त' स 'ध्वस्त होइत शांति
स्तूप' तकक काव्य-यात्रा
बेर-बेर कवि द्वारा अपन कविताक
प्रतिमान कें तोड़ैत
आ सर्जनाक लेल उपादेय
काव्य-तत्वक
अन्वेषण क यात्रा अछि।
ओहि तंत्र आ मंत्रक निषेध अछि
हिनक कविता, जे
मानव कें मुक्त नहि करैत अछि अपितु
नागफांस ने निरन्तर बन्हैत अछि आ
अन्ततः अपन
चाकर आ चाटुकार बना लैत अछि।
सामाजिक-राजनीतिक विद्रूपता आ
पारम्परिक पाखण्ड
पर समर्थ प्रहारक संवेदनात्मक
अभिव्यक्ति अछि
कीर्ति नारायण मिश्रक काव्य-संसार
आ एहि संसारक
कोन-सान्हि मे अछि हिनक
सौन्दर्य-बोध, प्रेम आ
उत्सर्गक कतेको पड़ाव।



कीर्ति नारायण मिश्र

हिन्दी कविता - संकलन
शिखर पर साँझ (1970)
विराट् वट-वृक्ष के प्रतिवाद में
(1991)

मैथिली कविता संकलन
सीमान्त (1967)
महानगर (1968)
हम स्तवन नहि लिखब (1969)
ध्वस्त होइत शान्ति स्तूप (1991)

सम्पादित पुस्तक
आधुनिक मैथिली साहित्य. (1963)
राजकमल जीवन आ साहित्य
(1962)

सम्पादित पत्र-पत्रिका
परिवेश (हिन्दी लघु पत्रिका,
मासिक) 1962-63
आखर (मैथिली मासिक) 1967-
जन्म : 17 जुलाई 193
शिक्षा : एम. ए. (अर्थ शास्त्र),
एल.एल.बी

स्थायी पता
सौभद्र निवास शीकहरा,
बरौनी- 851112 (बिहार)

कार्यालय पता
चित्तावालसा जूट मिल्स
चित्तावालसा - 531162
विशाखापट्टनम् (आंध्र प्रदेश)

ध्वस्त होइत शान्ति स्तूप

कीर्त्ति नारायण मिश्र

पारिजात प्रकाशन
पटना

प्रकाशक
पारिजात प्रकाशन
कामता सदन, बोरिंग केनाल रोड,
पटना - 800001

मूल्य : पचास टाका (Rs. 50/-)

प्रथम संस्करण : कार्तिक धवल त्रयोदशी (19.11.91)

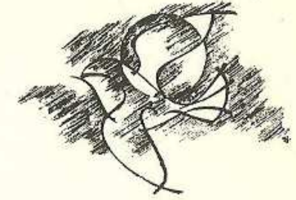
मुद्रक : समकालीन प्रकाशन, मदनधारी भवन,
एस.पी.वर्मा रोड, पटना - 800001

आवरण : इरफान

प्राप्ति स्थान
डा. वागीश कुमार मिश्र
रमेश्वरलता संस्कृत कॉलेज
दरभंगा - 846004

प्रो. राजीव कुमार मिश्र
शास्त्री निवास, शोकहरा
बरौनी - 851112

DHWAST HOIT SHANTI STOOP
(POEMS) By KEERTI NARAYAN MISHRA



अपन पूज्य पिता
वेदान्त, व्याकरण, न्याय, ज्योतिष तथा जैन दर्शनक
प्रख्यात विद्वान
पण्डित श्री दिनेश मिश्र

आओर
माता श्रीमती सुभद्रा देवी
केँ
सविनय

अनुक्रम

कविताक अन्तर्कथा : हमर रचना-प्रक्रिया

कोनो रचनाकारक लेल अपन रचना प्रक्रिया पर लिखब अथवा बाजब कठिन छैक। ओहिना जेना कोनो प्रसवाक लेल प्रजनन-प्रक्रिया पर वक्तव्य देब। ओ पूर्व प्रक्रिया, गर्भावस्थाक कष्ट आ सन्तानोत्पत्ति सँ प्राप्त आनन्दक प्रत्यक्ष अनुभव करऽवाली होइतहुँ एहि प्रक्रिया पर किछु नहि बाजि पबैत अछि। मुदा यदि ओ डाक्टरी पेशाक महिला अछि तऽ सैद्धान्तिक-व्यावहारिक ज्ञान एवं प्रसवक व्यक्तिगत अनुभवक आधार पर एकटा पैघ ग्रन्थ लिखि सकैत अछि। ओकर प्रामाणिकता पर सन्देह नहि कैल जा सकैछ।

जे कवि-कथाकार आलोचनो लिखि सकैत छथि-हुनका लेल ई काज डाक्टरी पेशाक महिला जकाँ सरल भऽ सकैत छनि। अन्यथा, रचना-प्रक्रिया पर सोचब, विचारब, लिखब अथवा वक्तव्य देब, पाठक, आलोचक एवं अनुसंधानकर्त्ताक काज छनि। ओ अपने क्षमताक अनुरूप बेसी नीक जकाँ बाजि-लिखि सकैत छथि।

मौलिक रचनाकारक सीमा भाव, अनुभव, शब्द, शिल्प, विन्यास धरि पहुँचैत-पहुँचैत समाप्त भऽ जाइत छनि। पछाति रचित-साहित्य समाजक वस्तु भऽ जाइत अछि आ लेखक सेहो पाठकक श्रेणी मे आबि जाइत छथि। हुनक विशिष्टता एतबे रहैत छनि जे रचना मे अभिव्यक्त मनःस्थिति, भावस्थिति, घात-प्रतिघात आ क्रिया-प्रतिक्रिया केर द्रष्टा, भोक्ता आ प्रस्तोताक रूप मे सामाजिक संवेदनाक सङ. रचनात्मक स्तर पर तादात्म्य राखैत छथि, प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप सँ सामाजिक दायित्विक प्रति सचेतन रहैत छथि।

हम जहिया लेखन आरंभ कैने छलहुँ, ई दायित्व-बोध नहि छल। साहित्यिक अभिरुचि संस्कार एवं पारिवारिक साहित्यिक वातावरण तथा परिवेश सँ प्राप्त भेल छल।

कल्पना आ भावनाक पाँखि पर उड़ऽ काल प्रेम, सौन्दर्य, प्रकृति आ मानवीय आदर्शक वायुक स्पर्श भेल। पहिने कविताक सङ.-सङ.गीत सेहो लिखैत छलहुँ। किन्तु भावक उन्मुक्त अभिव्यक्ति होइत छल कविता मे। हमर प्रारंभिक बहुत रास रचना मे गीतात्मकता रहितहुँ, मूल स्वर गीतात्मक नहि छल, ई बात दोसर थिक जे किछु गीत नवीन प्रयोग आ भिन्न शैलीक कारण चर्चित भऽ गेल किन्तु हमरा दृष्टियें ओहि सभ मे गतानुगतिकता बेसी छल।

दिशा-बद्ध भाव-संगति (Channelled emotion), रूढ़ माग अथवा पद्धति (Predeterminal pattern), सैद्धांतिक अथवा वैचारिक प्रतिबद्धता (Ideological Commitment) सँ बन्हब हमरा प्रारंभहि सँ स्वीकार नहि छल। आत्मचेतनाक विकासक सङ. अस्वीकार विद्रोह मे बदलऽ लागल। अपनहुँ कविता, गीत, मान्यता, स्थापना, विचार जे पहिने मुग्ध कैने रहैत छल, कारावासक यंत्रणा दिअऽ लागल। वैचारिक कारावास मे साहित्यिक कैदीक लेल विशेष व्यवस्था-सुविधा रहैत छैक ठीक ओहिना जेना मत्स्य अथवा जन्तु-जलाशय (Aquarium) मे जन्तुक लेल क्रीड़ा-क्षेत्र आ आहार।

पुरान भाव, एकबगाह दृष्टि आ जड़ीभूत अभिव्यंजना सँ काव्य-विस्तार कें अवरूद्ध करबा सँ नीक छल 'सीमान्त' करब आ नव क्षेत्रक अन्वेषण करब। आत्म-संघर्ष सँ प्राप्त भाव-विचार, आन्तरिक-राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय समस्या सँ उत्पन्न् तनाव, ह्रासोन्मुख मानव मूल्य आ राष्ट्रीय चरित्र, दुःख-दैन्य बेकारी-रोग सँ लड़ैत-मरैत जन-जीवन सभक प्रभाव लेखन पर पड़ैत छैक। ओ लेखनक दिशा आ प्रवाह कें मोड़ैत रहैत छैक।

अपन सीमित क्षमता आ विवेक सँ आत्मसात् प्रभाव आ दबावक कलात्मक अभिव्यक्ति लेखकक लक्ष्य होइत छैक। ओ कला कें कलाक लेल नहि, यथार्थक अभिव्यक्तिक लेल स्वीकार कए ओकरा आओर बेसी अर्थवान् बना दैत अछि।

अभिव्यक्ति हमरा लेल जतबे सहज अछि, अनुभव ततबे कष्ट-साध्य आ यंत्रणापूर्ण। प्रत्येक गंभीर कविताक पाछाँ असहनीय आत्मवेदनाक भावेतिहास अछि। आत्म-निवेदनक सरल रस्ता कें छोड़ि कए आत्म-संघर्षक बीहड़ मे बौअएबाक निर्णय स्वैच्छिक अछि तें मार्ग-(अथवा शिल्प) सन्धान सँ लऽ कए आत्माभिव्यक्ति धरिक प्रक्रिया यातना सँ भरल रहैत अछि। कविता हमरा लेल "मुक्ति-प्रसंग" नहि यातना-प्रसंग अछि। कोनो विशेष भावक मनोवेग मे सप्ताहक-सप्ताह, मासक-मास बौखैत-खौलैत रहब हमर नियति भऽ गेल अछि। हठात् दू-चारि दिनक लेल कतहु पड़ा जाएब आ जँ पड़यबाक अवसर नहि भेटय तऽ मास-मास धरि अज्ञात अवसाद मे डूबल-हेराएल रहब हमर लिखऽ सँ पहिनेक सामान्य चर्चा थिक।

लिखऽक लेल कल्पना, भावना बुद्धि आ विवेकक अतिरिक्त आन्तरिक एकाग्रता अथवा अन्तःचेतनाक केन्द्रीकरण चाही। आ एहिलेल चाही पर्याप्त समय, उन्मुक्त वातावरण, स्वस्थ चिन्तन एवं अस्तित्व-रक्षाक लेल आर्थिक आधार।

लिखऽ लेल जिअब, जिअऽक लेल रोटी, रोटीक लेल चाकरी, चाकरी मे बनल रहऽक लेल चौबीसो घंटाक दायित्व-वहन आ दायित्व-वहनक लेल प्रबंधकक रूप मे ओ सभ काज करब अथवा कराएब अथवा ओकर सूत्र- संचालन-निदेशन करब जकर हम ह्रदय सँ विरोधी छी, जे हमर सिद्धान्तक विपरीत अछि- ई चक्राकार विडम्बना हमर लेखन कें गीड़ि रहल अछि आ हम अपनहि आँखि सँ अपन नाश-लीला देखि रहल छी। ने हमरा मे यात्री जी वला विशाल जीवन-दृष्टि अछि, ने राजकमलवला साहस। पछिला पनरह वर्ष सँ नौकरी छोड़ि लेखन कें सम्पूर्ण समय देबाक बात सोचि रहल छी किन्तु पारिवारिक दायित्व कहैत अछि--'गीत कवित बिसरि' हरक मूठि थामने रहू, बहैत रहू ओहि 'अपटी खेत' मे जा धरि बहि सकैत छी।

हम अनावश्यक रूप सँ एहि व्यक्तिगत प्रसंगक उल्लेख एहि लेल कैलहुँ जे कोनो लेखकक रचना-प्रक्रिया पर ओकर व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक दबाव आ बन्धनक बड़ व्यापक-प्रभाव पड़ैत छैक। हम जतबे बन्धनमुक्त रहऽ चाहैत छी ततबे बन्धन मे जकड़ल जा रहल छी ई विवशता मात्र हमरे नहि।

सभ लेखक बन्धन-मुक्त रहऽ चाहैत छथि। अपन स्वतंत्रताक लेल शक्तिभरि बन्ध-प्रतिबंध कें तोड़ितो छथि। श्रेष्ठ सर्जनाक लेल निर्बन्ध होयब आवश्यक। किन्तु प्रश्न अछि, किछु अपवाद कें छोड़ि कए, लेखकक लेल की बन्धनमुक्त होयब संभव छैक ? की ओ लेखन पर जीवि सकैत अछि ? उत्तर अछि कम-सँ-कम भारत मे तऽ नहियें।

आंशिक संभावना अंग्रेजी, हिन्दी, बंगला, मराठीक साहित्यकारक लेल छनि किन्तु मैथिलीक साहित्यकारक लेल अकल्पनीय। तखन जिअऽक लेल आजीविकाजन्य बन्धन स्वीकार कए ओकर नाग-फाँश मे जकड़ि जायब अपरिहार्य। आनो भाषा मे लिखब आवश्यक।

कोनो लेखक भौतिक सुखक प्रति बहुत बेसी साकांक्ष नहि रहियो कें भौतिक आवश्यकता सँ त्राण नहि पाबि सकैत अछि। "स्वान्तः सुखाय रघुनाथ गाथा" कहऽ वला कवियो कें, स्त्री परिवार छोड़लाक बादो, देशक धार्मिक राजधानी काशी मे आबि कें वास करऽ पड़ल छलनि। आजुक कवि तऽ लिखैत-छपैत रहि चर्चित-पुरस्कृत सेहो होबऽ चाहैत छथि। हुनका लेल राज्य अथवा देशक राजधानी मे रहब आवश्यक। गाम-देहात मे रहि निष्ठापूर्वक लिखऽ वला साहित्यकार अस्तित्व-संघर्ष मे समाप्त भऽ जाइत छथि। ने हुनका केओ जोहऽ-देखऽ-पूछऽ-छापऽ वला, ने हुनक लेखकीय महत्व कें बुझऽवला। उनटे ओ तथाकथित नागरिक साहित्यकारक समक्ष उपहासक पात्र भऽ जाइत छथि। ऊर्जावान होइतो हुनका बुझाइत छनि जे ऊर्जा समाप्त भऽ गेल अछि, पाठकक लेल उत्साह आ आनन्दक स्रोतस्विनी बहबैक क्षमता रहितो ओ अपना कें निरानन्द-निस्त्साह अनुभव करैत छथि।

एतय हमरा बेर-बेर मैथिलीक लेल समर्पित, वरिष्ठ कवि, कथाकार, उपन्यास-लेखक जीवकान्त मोन पड़ि रहल छथि। ओ लिखने रहथि--"हमर लिखबाक उत्साह मे कमी आयल अछि।"

. . . जीवनक प्रति आ किछु करबाक प्रति बहुत आवेश नहि अनुभव करैत छी। सामान्य दिनचर्या मे बान्हल जेना अनिच्छा सँ जी रहल छी। . . . बहुत रद्दी ढंग सँ जीवनक उत्तरार्द्ध बीति रहल अछि।"

जीवनकान्त कोनो साधारण प्रतिभाक साधारण साहित्यकार रहितथि तऽ एहि सभ वाक्यक सोझ अर्थ लगाओल जा सकैत छल-व्यक्तिगत कुण्ठाक कारण जीवनक यथार्थ सँ हुनक पलायन, किंवा विफल मसिजीवीकेर आत्मबोध किंवा आत्म-चेतना केर अन्तर्दृष्टिक समाप्ति। किन्तु , ओ विराट् प्रतिभा केर समर्थ रचनाकार छथि आ एहि निराशा/निष्क्रियता-बोधक अर्थ नीक जकाँ बुझैत छथि। भऽ सकैत अछि ई बोध हुनका वर्षापूर्वक आकाशीय निस्तब्धता आओर रचनात्मक त्वरा प्रदान करनि, हुनका आओर वागार्द कऽ देनि किन्तु एहि सँ सर्वाधिक प्रभावित होइतनि हुनक रचना-प्रक्रिया।

एहि दोसर अवान्तर प्रसंगक उल्लेख कए हम ई कहऽ चाहैत छी जे कविक

आत्म-तत्व पर ओकर व्यक्तिगत आस्था, अवस्था अथवा स्थिति एवं सामाजिक परिस्थितिक दबाव अनवरत पड़ैत रहैत छैक, ओकर काव्य-चेतना आ सौन्दर्य-बोध पर संवेदनात्मक प्रहार होइत रहैत छैक आओर कवि एहि वैपम्य, द्वन्द्व पीड़ा-प्रताड़ना कें रचनात्मक स्तर पर स्वीकार कए अपन गहन अनुभूतिक काव्यात्मक अभिव्यक्ति करैत रहैत अछि। परिवेश तथा सामान्य जनक संघर्ष, जीवन-मूल्य, बुद्धि-विवेक, कार्यकलाप, समाजिक दृष्टि-बोध कें आत्मसात कए अपन भावनात्मक एवं ज्ञानात्मक क्षमताक अनुरूप समय कें शब्दबद्ध करैत रहैत अछि।

ई एकटा आदर्श स्थिति भेलैक। हमर यथार्थ किछु आओर अछि। हम लिखऽक सङ-सङ अपनाकें तोड़ैत रहैत छी। तोड़ि कें सर्जनाक लेल उपादेय तत्व जोहब, नवक अन्वेपण करब, पुनः सभक परीक्षण-पुनर्परीक्षण करब-एकटा वैज्ञानिक प्रक्रिया थिकैक। ने रचनाकारक हृदय एहि लेल सहजें तैयार होइत छैक आ ने भाव, सौन्दर्य-बोध तथा विचार एहन निर्मम-तटस्थ परीक्षण सहन कऽ पबैत छैक। साहित्यिक सत्य आ वैज्ञानिक निष्कर्ष दुनू मे मानवीय सन्दर्भक सजातीयता रहितहुँ, अनेक विजातीय तत्व छैक।

सभ बुझैत रहितहुँ नहि जानि कियैक रचऽ सँ पहिने तोड़ब आवश्यक बुझाइत अछि। एहि आन्तरिक प्रक्रिया मे ओ सभ नष्ट भऽ जाइत अछि जे पहिने प्रिय, आकर्पक एवं उपादेय लगैत छल।

दोसर बात अतिक्रमण आ आक्रमण हमरा प्रिय अछि। अतिक्रमण अपन वा आनक बनाओल सीमा-रेखा केर तथा आक्रमण भावनात्मक जड़ता एवं काव्य-रुढ़ि पर। हमरा दृष्टिये कविताक स्वास्थ्य एवं विकासक लेल ई परमावश्यक छैक। ओहुना कविताक कोनो भौगोलिक सीमा नहि होइत छैक। अतः अतिक्रमण-आक्रमण द्वारा केओ साम्राज्य-विस्तारक बात नहि सोचि सकैत अछि।

भावनात्मक जड़ता आ काव्यात्मक रुढ़ि मात्र परंपरा, अपन पूर्व लेखन तथा यांत्रिक भाव-तरंगे सँ नहि प्राप्त होइत छैक, स्वयं कवि सेहो एहि जड़ता आ रुढ़ि केर भावनात्मक स्तर पर निर्माण करैत अछि। कोनो भाव अथवा विचार कें स्थायी मानि अथवा काव्यादर्श बूझि अपने मनोवेग कें पूर्व निर्धारित सीमा-क्षेत्र मे विचरणक लेल बाध्य करब हमरा पसिन्न नहि। हमरा पसिन्न अछि मूर्त्ति बनाएब आ तोड़ब आ सृष्टिक शाश्वत नाश-निर्माणक प्रक्रिया मे अपन आ अपन कविताक अस्तित्व कें आजीवन जोहैत रहब, प्रश्नाकुलता मे जिअब आ अन्तहीन काव्य-पथक यात्री बनल रहब।

यात्रा लक्ष्य धरि पहुँचऽ केर माध्यम थिकैक किन्तु ओ यदि लक्ष्य भऽ जाइ तऽ मार्गक भयावहता, कप्ट आ संघर्पक दंश स्वतः कम भऽ जाइत छैक, अन्तर्चेतन नव आ अज्ञात पथक अन्वेष्णक लेल प्रेरित करऽ लगैत छैक आ जँ यात्राक लेल आँखिक समक्ष एक-सँ-एक नव पथ हो तऽ लोक पाछाँ घुरि कें नहि देखैत अछि। इएह अग्रगति तऽ साहित्य आ कलोक लक्ष्य छैक। ई स्वानुभव नवीनता आ विचित्रता सँ भरल यात्रा-पथ पर आत्मसंघर्ष कें ऊर्जा प्रदान करैत छैक।

जन्म गंगा सँ पाँच किलोमीटर दूर शोकहरा मे भेल छल आ युवावस्था बीत रहल अछि समुद्र सँ पाँच किलोमीटर दूर चितावालसा मे। बाल्यकाल मे नदीक कात मे रेत पर

हस्ताक्षर करैत रही, सम्प्रति समुद्रक रेत पर करैत छी। हमर रचना-प्रक्रिया रेत पर हस्ताक्षर करब थिक।

रेत पर कैल गेल हस्ताक्षर कें नदीक धार आ समुद्रक हिलकोर मेटा दैत छैक किन्तु जलाघात सहितहुँ रेत ढेहु कें चेतौनी दैत रहैत छैक। आ ढेहु अपन स्निग्ध स्पर्श सँ आंगुरि कें हस्ताक्षर करऽक लेल पुनः आमंत्रित आ स्पंदित करैत रहैत छैक। लिखब-मेटाएब-लिखबक एहि अनन्त कौतुक-क्रीड़ा सँ बेसी नीक आओर कोन रचना-प्रक्रिया भऽ सकैत अछि।

'सीमान्त' क बाद 'हम स्तवन नहि लिखब' आ 'हम स्तवन नहि लिखब' सँ अद्यावधि रचित कविता धरि तऽ हमरा प्रक्रिया-बोध नहि भेल अछि। बड़ कम लिखने छी आ लिखियो नहि पबैत छी। जखन रचने नहि तऽ रचना-प्रक्रिया पर कहबा-लिखबाक कोन अधिकारी ? दू-चारि टा किछु लिखि-छपबा कें रचना-प्रक्रियाक मर्म बूझि लेब संभव नहि छैक। पहिने किछु लिखि ली आ बूझि ली, जे की लिखलहुँ। केहन लिखलहुँ, तकर बाद सोचब कोना लिखलहुँ।

कविताक कार्यशालक मे कहियो नवसिखुआ (Apprentice) रूप मे प्रवेश कैने छलहुँ, एखनहुँ नवसिखुआ बनल छी, आजीवन बनल रहब। एहि कार्यशाला मे 'एप्रेन्टिसिप' कहियो समाप्त नहि होइत छैक। एकटा प्रशिक्षणार्थी अपन अपूर्ण ज्ञान सँ दोसरा कें प्रशिक्षित करबाक बात कोना सोचि सकैत अछि ? अपन अथवा आनक रचना-प्रक्रिया कें बूझऽक लेल अपेक्षित सहृदयता-विशेषज्ञता अर्जित करबाक लेल प्रयासरत रहब उचित बुझाइत अछि।

17 जुलाइ 1991

ध्वस्त होइत शान्ति-स्तूप

एहि सैनिक कैंप में
धियापुत केर एकटा किलकारी
पत्नी केर एकटा झलकी
माय-बापक एकटा चिट्ठी
केर की अर्थ होइत छैक, अहाँ कें बूझल अछि
आशाजी !

अहाँ तऽ आएल छी
'प्लेजर ट्रिप' पर जाफना
सुविधापूर्ण वाहन मे बैसि कए
सुरक्षित आवासक पहिनहिं व्यवस्था कए
सरकारी दायित्व छैक अहाँक जीवन-मरण
सैन्य-दलक ई दुर्लंघ्य प्रचीर लाँघि
केओ कोना करत हरण

अहाँ एतय रहि शान्ति-लीला देखू
आ संहारक आनन्द लिअऽ
हम छी छगुन्ता मे
बुद्ध चल गेला कतऽ
कतय छथि भूमिगत
संघमित्रा महेन्द्र
बौद्ध विहार भऽ गेल कोना
युद्धक केन्द्र
उघैत रहताह कहिया धरि
शान्ति-प्रिय सिंहली बन्धु
बारुदक बस्ता
आ
तमिल धयने रहताह हिंसा केर रस्ता

रेडियो-सक्रिय-तरंग सँ उद्वेलित
एहि महासागर मे
शान्त जलबिन्दुवत्
'धम्पद'-अभिमंत्रित ई हीनयानी द्वीप
खाइत रहत कहिया धरि
दक्षिण अफ्रीकाक बेन
इसराइलक भार-डोर
अमरीकाक डाला
पाकिस्तानक भोग

अहाँ कें कैने अछि विस्मित
युद्धपोत पनिडुब्बी शस्त्रास्त्र
युद्धक विमान आ प्रक्षेपास्त्र
हमरा कैने अछि व्यथित-मथित
जातिभेद
माछ सभक पंच बनल 'शार्क-ह्वेल'
जल समाधि नेने घरिआर
ध्वस्त होइत शान्ति-स्तूप
शिखरासीन 'रडार'

'कर्णामृत', अप्रैल-जून 89

यातना-शिविर

हम अहाँ सँ
ने प्रेम कऽ सकलहुँ
आ ने घृणा
ने सांकल्पिक उत्सर्गक भावना सँ
कहियो स्वीकार कऽ सकलहुँ
आ ने तत्वमुक्त वस्तु बूझि अस्वीकार
हमरा सँ
परित्यागक लेल
अपनाओल नहि जा सकल षड्यंत्रपूर्ण वैराग्य
आ ने अहाँ कें बिसरऽक लेल
कीनल गेल भोगलिप्त एकान्त

सभ किछु निस्द्देश्य रहितो
होइत रहल उद्देश्य-त्रस्त
कोलतार सँ रँगल आकाश मे
होइत रहल हमर शौर्य-सूर्य अस्त
आ
हम अपनहिं हाथ सँ बनाओल
यातना-शिविरक लेल
जुटबैत रहि गेलहुँ
एक-सँ-एक विडम्बना
एक-सँ-एक विद्रूप
एक-सँ-एक क्षेपक
अपनहिं देबार पर टाँगैत रहि गेलहुँ
कल्पित अपराधक सूची
ओना कहियो होइत छल
आलोचनाक सड़ल खाधि मे नहि डूबी

हम अपन भावना कें कहियो

अर्घ्य मे परिणत करऽ चाहैत छलहुँ
अपन अस्तित्वक अंजलि
देवता केर पयर पर चढ़बऽ तऽ चाहैत छलहुँ
किन्तु आब तऽ कहियो
अपन अपराधक लेल
कयल नहि जायब क्षमा
हमरा अपराधमुक्त देखबाक लेल
हे हमर पंक्तिबद्ध प्रियतमा

जिनगी जँ कोनो कोल्हु केर बड़द
कोनो इंजन केर पिस्टन
कोनो व्यक्ति केर विज्ञापित नैतिकता
कोनो भोग्या केर शारीरिक अवशेष
कोनो जुआड़ी केर अंतिम दाव
कोनो शराबी कें बेहोशी मे देल गेल 'पेग'
बनि जाय
तऽ की अहाँ चाहैत छी जे
हम ओकर राजनीतिक व्याख्या प्रस्तुत करी
अथवा तांत्रिक-मांत्रिक-यांत्रिक प्रयोग सँ
कोनो एहन मनुक्ख कें जन्म दऽ दी
जे गर्दनि झुकौने
दाँत निपोड़ने
अपन अभावक दंश कें चाटुकारिता मे
परिणत करैत
विभिषणी तत्परता सँ
कोनो विस्तारवादी अत्याचारी राम कें
स्वर्ण प्रदेश मे प्रवेश करबैत रहय
आ लोक कें भ्रमित करबाक लेल
कहियो केर तपस्वी रामक
कथा सुनबैत रहय

धर्मक व्यवसाय मे प्रचुर लाभ छैक
जँ आस्थाविहीन आ अंधविश्वासी लोक भेटैत रहय
आ ई व्यवसाय अपना देश मे खूब चलि रहल अछि
गीता, रामायण, बाइबिल, कुरानक उत्पादन
बढ़ि रहल अछि
पारंपरिक गोदान आ पिण्डदानवला
स्वीकृति
ज्ञान-दानो कें भेटि रहल छैक

आइ पाइ बिना केओ जीवि नहि सकैत अछि
आ सभ केओ पाइक लेल जिअऽ चाहैत अछि
पण्य वस्तु जकाँ बेचल जा रहल अछि
नैतिकता चरित्र
कौमार्य सतीत्व मातृत्व आ देवीत्व
लोक भजा रहल अछि
अपन वंश उपाधि आत्मिक उपलब्धिक
चौबटिया पर फोलने अछि दोकान
आ बेची रहल अछि आत्म-सम्मान

कोनो कोनो रोगक
कोनो दबाइ नहि होइत छैक
ने चिलमक ऊर्ध्वमुख अग्नि धूम्र
ने भाङ. ने चरस
ने गाँजा ने दारू
ने कामिनी ने कंचन
ने कीर्त्ति ने स्तवन
सिंहासन आ सत्ता बढ़बैत छैक ताप
राजनीति आ नेता रक्तचाप

प्रत्येक व्यक्ति कें मरऽ सँ पहिने
कान्ह आ कफनक व्यवस्था कऽ लेबाक चाही

आ भऽ सकय तँ
श्मशान घाट आबि कए अंतिम श्वास लेबाक चाही
एहि विश्वव्यापी तेल-संकटक समय मे
मृत्यु कें विवेकपूर्ण बनैबाक चाही

व्यवस्था लोक सँ आत्म-सर्म्पण करा लैत छैक
आ ओकरा
पीपर बऽड़ अओराक गाछ तर
आत्मजानुजापेक्षी बना कए
हनुमानी मुद्रा मे ठाढ़ कऽ दैत छैक
ओकरा अपन जीअब
अश्लील बुझना जाइत छैक
नितान्त वीभत्स विध्वंसक आ प्रवंचना-युक्त
तथापि जिनगी कें
एक गोट अपरिहार्य विवशता
एक गोट अवांछित यथार्थ बूझि
ओ जिबैत अछि
आ जीबाक लेल ब्लेकमार्केटियर भऽ जाइत अछि
अथवा कोनो पुंसत्वहीनक दलाल
अथवा ककरो यौवनक बजार-भाव
बनौने रहक लेल
ककरो नोंचैत रहैत अछि खाल
बनि जाइत अछि ककरो प्रेमी
ककरो जामाता
राति भरि जे बनल रहैत छैक अंकशायिनी
दिन मे ओकरे भऽ जाइत अछि भ्राता

किछु वर्ष चरित्र आ नैतिकता केर
शीलहरण कए
शेष जिनगीक लेले
अपना कें

दानबीर समाजसेवी नेता आ धर्मात्मा
घोषित करौनिहार व्यक्तियो केर
अभिनन्दन करऽ पड़ैत छैक
अपन अनामंत्रित आगमन
निरुत्साह स्वागत
अश्रुरहित बिदाइ
सभ कें बिसरि
जिनगी भरि
नोनछर पानि पीबऽ पड़ैत छैक

किछु लोक जीबि कए
दोसरा कें आभारी बनबैत छथि
जल पी कए गंगा पर कृपा करैत छथि
विलास-कक्ष मे सजा कए
वसन्त कें करैत छथि कृतार्थ
अपना तरहत्थी पर सूर्य कें बैसा कए
कहैत छथि देखबऽ लय पुरुषार्थ
अग्नि कें कऽ लैत छथि 'लाइटर' में बन्न
हवा कें अनुकूलित
पृथिवी सँ उगबाबैत छथि लॉन मे घास
छत पर टाडि. लैत छथि सौंसे आकाश

ओ जिअइत रहैत छथि
दैनिक कर्म आ प्रातःकालीन धार्मिकता सँ निवृत्त भए
भरि दिन आनक तिर्री मेल भाग्य के
सिअइत रहैत छथि

हत्या छैक अपराध
आइन कानूनक पोथी मे
मुदा जतय अपराधक निर्धारण करऽ बला
व्यक्ति आ ग्रन्थ द्वारा

कहियो कोनो विचार नहि कैल गेल
ओतय आत्महत्या उचित छैक
आ कि कानूनक मर्यादा

क्षुधा यंत्रणा शोषण रोग आत्महनन कें
गीता बाइबिल मार्क्स आ गाँधी केर
आर्ष समाधान पर
आओर कतेक सहिष्णु बनाओल जाय
आओर कतेक, व्यक्ति के सुखमय मृत्युक लेल
'मदर टेरेसा' केर
निर्मल हृदय मे सजाओल जाय

जतय लोक अपनहि देस मे अदना बनि गेल हो
– खाँटी तृतीय पुरुष
भिक्षा-पात्र बनल जे जिनगी भरि सहन करैत हो
दाताक दृष्टि पुरुष
जकारा लेल अपनहिं हाड़-माँसु
भऽ गेल हो भारी
जकरा लेल मुक्ति-संदेश आनैत हो महामारी
ओकरा बारूदक तहखाना सँ बहार कए
कहिया धरि मानवाधिकारक
अर्थ बुझाओल जाय
आ यातना-शिविर सँ
कोना मुक्ति दिआओल जाय

मि.मि., 6-12 जुलाइ '80

की अहीं छलहुँ

चन्द्रगिरि सँ महेन्द्र गिरि धरिक बाट कें पयरे धाँगैत
अहाँ के छोड़ि कए
केओ तऽ नहि छल हमरा संग
आदिवासी सभक दुलकी
अथवा तिब्बती शरणार्थी सभक
साइकिलक टुन-टुनी छोड़ि
आओर किछु तऽ नहि कैने छल शान्ति-भंग

अहाँ कखनो अबोध शिशु
कखनो अंतरंग मित्र
कखनो अनुभवी अभिभावक जकाँ
हमरा चलइत
मुग्ध होइत
अपना कें प्रत्येक डेग पर लुटबैत
देखियो कए
एक्को बेर नहि कहलहुँ
बाउ, सौंसे पर्वत-प्रदेश एहने छैक
अपन हृदय कतय-कतय हारब
सौन्दर्यक एहि उपत्यका मे
कए गोट सुन्दरी कें सोर पारब

नहि जानि कखन हमरा
अहाँ अपन डोरी सँ बान्हि लेलहुँ
फेर घुसकुनिया काटऽक लेल
गिरि-उठि कए चलऽक लेल
मोन भरि दौगऽक लेल
शक्ति भरि उड़ऽक लेल
सौंसे गिरि-प्रान्तर मे छोड़ि देलहुँ

ओ जे 'पंचाम' क मोड़ पर
ठाढ़ि छलि तिब्बती बालिका
(छब्बो, टसी, टेंसी)
की अहीं छलहुँ

ओ जे जापानी बौद्धमठक प्रधान अब्बोट
(सौरु मोनी TSRU MONI)
देने छलाह ओहि अज्ञात शिखर पर आशीर्वाद
दुनू हाथ जोड़ि कए
की अहीं छलहुँ

ओ जे निभृत एकान्त बूझि
रम्भाक जंगल मे
सलाइ लेसि रहल छलि
आदिवासी कन्या
(डामोनी, कुनि कस्तूरी, शुबा)
की अहीं छलहुँ

ओ जे हजार-हजार फीट नीचाँ सँ पानि ऊघि
पहाड़ी 'टेरेस' के कृषि योग्य बना रहल छलि उत्कलपुत्री
(बसन्ती, राधा, यमुना)
की अहीं छलहुँ

ओ जे लोहागुड़ी, चन्दीपुत, लबरसिंहीक घाटी मे
'सलहु' आ 'महली' क निशाँ मे
मित्रक पांज सँ अपना कें छोड़बैत
भेटल छल आदिवासी युवा.
की अहीं छलहुँ

ओ जे 'तप्तपानी' क गरमकुण्ड मे स्नान करा
माता 'कन्धुनी' क जलमग्न प्रस्तर-खण्ड पर

माथ टेकऽक लेल
बेर-बेर आग्रह कऽ रहल छल वृद्ध
की अहीं छलहुँ

अहाँ बाजू अथवा जुनि बाजू
हम कोना बिसरब
मौन रहि कहने छलहुँ अहाँ कतेक बात
बुझा देने छलहुँ
अपन संकेत सँ
केतक रहस्य अज्ञात

हम कोना बिसरब
वृक्षावेष्टित शिखर-समूहक मांझ
अपन सप्ताश्व रथ सँ उतरि
परिछल जाइत वऽर जकाँ
कोना अंटकि-अंटकि डेग बढ़ा रहल छलाह
अपन एहि बन-खण्ड सासुर मे
लजकोटर सूर्य

कोना बिसरब पक्षी सभक परिछनि गीत
कोना बिसरब चंचल चिड़ैं द्वारा
पाहुन कें पढ़ल गेल अव्याहत गारि
कोना बिसरब घोघ मे छलीह कतेक
सुन्नरि लगैत ऋतु सुकुमारि

हम तऽ किछु नहि बिसरब
हम तऽ किछु नहि बिसरब

वैदेही, जुलाइ, 1990

सभ किछु नीक लगइए

सभ किछु नीक लगइए
यथास्थिति मे सभ सुख भेटइए
रोटी भऽ गेल राजनीति केर ग्रास
पेट अध्यादेश सँ भरइए

दंगा, हत्या, बलात्कार छनि हुनक सौख
मुदा ई मड़ैया अपन बेटा लेल कनइए
सौंसे परोपट्टा सत्रावसान भेल संसद जकाँ
लादने अछि गुमकी
लोक अपनहि कान्ह पर मरइए

न्याय आ नीति पर ओ करबा रहलाह अछि
शोध
जिनक आत्मा मे दुनमरिया आस्था बरइए
सभठाम हननक लेल
जोहल जा रहल अछि चरित्र
हमर शरीर तऽ वेश्यालये मे रहइए

धर्म मस्जिद मे बैसि कए
करबा रहल अछि हत्या
हमर पाप पुण्यक लेल
तर्पण करइए
एखन स्वर्ग मे
पचसितारा सुविधा जुटाओल
जा रहल अछि
तावत् कुम्भीपाके भरइए

देसकोस, नवम्बर '81

कनेक आओर

कनेक आओर ठेलिअउ
खिआएल धूरीबला बड़दगाड़ी कें
कनेक आओर

कनेक आओर टिटकारिअउ
भऽ सकैत अछि
उठान हारैत बड़द किछु आओर ससरय

कनेक आओर परतारिअउ
मरकछ बहलमान कें
नरैठी मे अटका कए परान
कतहु ढंग तऽ नहि लधने अछि

पम्प, बीआ, डीजल आ खाद
खंडहर नहि पार कैने
देत कोन काज

कनेक आओर जोर लगबिअउ
आ खेत धरि पहुंचा दिअउ
ई सरकारी परसाद
चर-चांचर मे पसरऽ दिअउ
घूसक सुगन्ध
लिच्छोपलिच्छ होइत दुनमरी अन्न

देसिल बयना, सित.' 82

भाषानुराग

बैसकी मे विद्यापतिक फोटो
आ अरिपन सँ लऽकए सीकी-मौनी धरि सजाकए
जखन नहि अघएलनि मैथिलत्व
कीनि कए लऽ अयलाह आधुनिक कलाकेर
एकटा महरग स्तम्भ - चाननक ठुट्ठा गाछ
आ ओहि पर चानीक सिकड़ी सँ बान्हि कए
बैसा देलनि एक गोट सूगा

कोनो आगन्तुक कें देखिते
सूगा रटऽ लगैत अछि-
"साहब घरमे नहि छथि"
"मेम साहब पड़ोस मे गेलीह"
"बेबी एखने बहरैलीह अछि"
"ठाढ़ कियैक छी, बैसल जाउ"
"चाह पीब की कॉफी"

सौंसे परोपट्टा मे भऽ गेल अछि ई सूगा
चर्चाक विषय
स्तरीयताक मापदण्ड
भाषानुरागक बाजैत उदाहरण
देस-कोसक माटि-पानि मे डूबल
सेवा-भावनाक प्रतीक

सुनल अछि
एहि पाँच पांती कें रटएबा पर
खर्च कऽ चुकल छथि कतेक हजार
मैथिल प्रवर टुनाई बाबू
(क्षमा कैल जाय मिस्टर टी. झा)
शुद्ध सरकारी मद सँ

नहि तऽ महिषी केर ई वज्र देहाती सूगा
एना फटाफटि मैथिली बजितए

सचिवालयीय हिन्दी मे संस्कृत
राँटी वासी मिस्टर टी. झा
शहर अबितहि मातृभाषा बिसरि गेल छलाह
आ आइ धरि सभ सँ
'ऐं-ओं' युक्त अंगरेजिये मे बाजैत रहलाह
मुदा रिटायर होयबा सँ पूर्व
जागलनि भाषानुराग
पचसितारा होटलक व्यंजन सँ बेसी
नीक लागय लगलनि
अपना बाड़ीक साग
दैत रहलाह अव्याहत भाषण
जा धरि नहि भेटि गेलनि
भाषाध्यक्षक आसन

मि.मि. 10-16, अक्टू. 1982

सूर्यक चोरि

मोन नहि पड़ैत अछि
कहिया भेल छल सूर्योदय
आ कतेक काल धरि
पसरल रहल छल लालिमा
एहि गामक डोभा-डहार
आ भथलाहा पोखरिक कदुआएल पानि पर

मोन नहि पड़ैत अछि
मुदा लोक कहैत अछि
कहियो पूब दिशा सिनुरिया गेल छलि
आ एक गोट भ्रूण-पिण्ड
नहु-नहु ससरऽ लागल छल
हड़बड़ा उठल छल एक्के संग
सभ गिरहत आ बोनिहार

लोक कहैत अछि
किछुए कालक बाद उठल छलैक बिड़रो
सूर्य भऽ गेल छल अन्तर्धान
आ सौंसे क्षेत्र के कऽ देल गेल छलैक घोषित
अन्धकार-ग्रस्त क्षेत्र
अकास सँ खसऽ लागल छल
अनुग्रह-ज्योति

जहिया सँ होस भेल अछि
पौलहुँ अछि अपना कें
कृपा-दृष्टि पर जीबैत
गुज्ज अन्हरिया मे टोइया मारि-मारि
चोरि गेल सूर्य के जोहैत

किसुन जी

किसुन जी
कोना लागत जँ हम अहाँ कें
पनरह अगस्त अथवा छब्बीस जनवरी जकाँ
स्मरण करी
सौंसे वर्ष
विस्मृति केर धूरा तोपि
एक दिन
झाड़िकए सुखाकए
आत्मनेपद सँ
चौपहरा पुरश्चरण करी

अहाँ चौंकब नहि किसुन जी
एहिना होइत छैक
आस्था अधःगमन करैत पावनि बनि जाइत छैक
आ प्रेम
झण्डा मे बन्हल फूल जकाँ झड़ि जाइत अछि
ओना अहाँ भाग्यवान छी
वर्षक पक्ष-विशेष मे
पितर जकाँ स्मरण कैल जाइत छी
ई बात दोसर थिक जे अहाँ कें
कवि सँ समाधि बना देल गेल
आ सभ लिखलाहा कें
शिलालेख मे जड़ा देल गेल

आब अहाँ एहिना दाबल रहि जायब
पाथर के संवेदनशील बनयबा मे
जिनगी उत्सर्ग करऽ वला केर
इएह नियति होइत छैक
अहाँ तऽ देखि गेल छी

कोना भुवन जी आ राजकमल
प्रस्तरीकृत भऽ गेलाह

अहँाक प्रतिमा के माला पहिरा
लोक सभ कीर्तन मे लागल अछि
किछु कीर्तन करैत अछि
आ किछु मात्र सुनैत अछि
किन्तु आंखि मूनि सभ केओ मूड़ी डोलबैत अछि
झालि-मजीरा ढ़ोलक केर ताल पर

केहन लगितय किसुनजी अहँा कें
ई आवयविक संलग्नता
आ अष्टयामी मुद्रा
केहन लगितय
अपन भूतपूर्व समानधर्मा सभक
ई अभूतपूर्व भक्तिभाव

मि.मि., 3 मइ, 1981

एकान्तक अद्वैत

पहाड़ पर सँ उतरैत निर्झरिणी
खसैत अछि पाथर पर
आ बनि जाइत अछि
अनगनित उजरा फूल
फूल पर फूल पर फूल पर फूल ...

मौलिसिरी आ सिंगरहार
गत्र-गत्र के छूबऽ लगैत अछि
बाहुबद्ध कऽ लैत अछि कलहास
भीजऽ लगैत अछि ठोर
कतेक दिनक बाद
घुरि आयल अछि
ओएह पुरनका लाज

एहन एकान्त संध्या
आ ई अंक-शयन
चुम्बनोष्ण बुनकी सँ भीजैत अंग
विस्मित होइतीह अपनहिं देहक भाषा पर
सद्यः आलिंगिता
पुलकोत्फुल्ल वक्ष पर रखने माथ
करा रहलि छथि अमृत पान

हमरा कनेक आओर अंगेजैत देखि
हुनक अर्ध निमीलित आंखि
जेना कहि गेल
कनेक डूबऽ दियौ चान कें
पसरऽ दियौ अन्हरिया
सौंसे गिरि-प्रान्तर मे
फेर हमरा लोकनिकें

चिड़ै-चुनमुनियों नहिं देखि सकत
नहि रहत कोनो व्यवधान
करैत रहब संतरण
एकात्म भए
हम आ अहाँ
नहि मात्र हम
नहि मात्र हम
नहि नहि हम दुनू
हमरा दुनूक अद्वैतक ई प्रवाह
रहि जायत सभ दिन अथाह

मै.अ. पत्रिका, जून-जुलाइ 1981

जादूक खेल

अहाँ कोनो जादूक खेल देखने छी

बीचोबीच कटि कें जी उठलाक बाद
साँस जकाँ लगैत व्यक्ति
कोना पाइ ओसूलऽ लगैत अछि

अवश्य देखने हैब
रहिका, महिषी, घोघरडीहा, शोकहरा
कतहु देखल जा सकैछ ई खेल
सभठाम एक्के रंग
पेट पर बोनिक दाना छिड़िआएल भेटत

मुदा नहि देखने हैब अहाँ
कोना सुखैल अंतड़ी सँ
संवेदना जगाबऽवला सांगीतिक लय बहार कऽ लैत छैक
लोकक विवशता आ दैन्यक बेपारी
आ कोना ओहि लय कें
'कैसेट' में बन्न कए
देस-बिदेस पहुँचा दैत छैक

अहाँ एहि सभ सँ अनभिज्ञ
शत-प्रतिशत मैथिल छी
भाषाक लेल भाषण छपबा सकैत छी
जनक-याज्ञवल्क्य कें जीह पर मढ़वा सकैत छी
मुदा कफन केर बेपार नहि कऽ सकैत छी
विधान सभाक लहास कें
'ममी' बना कए संसद मे नहि पहुँचा सकैत छी
आ अहाँ ई सभ कहियो नहि कऽ सकब
तें मृतक जकाँ गामे मे रहब

आ चुप रहि रोज-रोज मरब

तेलक पाइप, काठक सिल्ली, चिन्नीक बोरा पर
ककर नाम लिखल रहैत छैक
के थिक विद्रोह, दमन, आ लोक सभक
भाग्य-लेखक सृजनहार
के थिक आठम अनुसूचि केर पंजीकार
के थिक जनगणना सँ मतगणना धरिक
नाटकक सूत्रधार
कोना भऽ जाइत छैक
अस्पताल आ श्मशान घाट एक दोसरक पर्याय
कोना जीवित ठेलि देल जाइत अछि गर्त मे
कोना मुइल बनि जाइत अछि जीवन्त अध्याय

अहाँ कें ई सभ नहि अछि बूझल
तें राजपथ पर अबितहिं लागैछ ठकमुगड़ी
आ सभतरि
गामक एक पेड़िआ, बोनिक दाना
आ जादूगरक पेटक चारुकात छीटल पाइ
देखाइत रहैत अछि
अभाव आ अकर्मण्यता कें
दार्शनिक आवेष्टन पहिराबऽ बला
हे हमर प्रचण्ड वीतरागी बन्धुलोकनि
कुशक ब्रह्म लऽ कए
कहिया धरि करैत रहब ब्रहमाण्ड-विजय
कहिया धरि चुरु सँ उपछैत रहब सिन्धु
कहिया धरि सभकिछु कें मानि शाप
करैत रहब गायत्री-जाप

मि.मि., 1981

रसिक-रंजनी

बहुत दिनक बाद
उगल छलीह रसिक-रंजनी
'पाम-बीच'क 'पुष्प-वीथि' मे
अपन रुधिराक्त ओष्ठ सँ
आवाहनकारी मुस्की फेंकैत

दिशाकाश मे पसरल मदालस
कनेक आओर उत्तेजक भऽ गेल छल
कनेक आओर लगिचिया गेल छल
एक-दोसर कें कनखी मारैत बहुतरास कुर्सी
छहलऽ लागल छल टेबुल पर राखल गिलास
समुद्र सँ अबैत नोनछर हवा
किछु कालक लेल भऽ गेल छल मधुराह

सांझ कें राति बनऽक लेल
एखन चारि घंटा आओर करऽक छलैक
निर्वस्त्र तपस्या
चारि घंटा आओर एखन पसरल रहऽक छलैक
कृत्रिम अमावस्या
रस-पिच्छल संध्या पर करऽक लेल नखन्यास
चारि घंटा आओर आकाश कें
करऽक छलैक कराभ्यास

मै. अ. पत्रिका, अग.-सित. '84

भरि राति

भरि राति हमरा समुद्र सोर पारैत रहैत अछि
भरि राति ओकर अट्टाहास पर ऊधिआइत उजरा फूल
करैत रहैत अछि हमर प्रतीक्षा
भरि राति सैकत-सिचनी पठबैत रहैत अछि
मुखर आमंत्रण
भरि राति अधराधर
जगबैत रहैत अछि लावण्येषणा

भरि राति हम करैत रहि जाइत छी यात्रा
भरि राति गाँथैत रहि जाइत छी
धवल मल्लिकाक वेणी
भरि राति भीजैत रहि जाइत अछि
सम्पूर्ण गात
भरि राति पीबैत रहि जाइत छी लवणामृत

मै. अ. पत्रिका, अग.-सित. '84

सौंसे गाम पजरि रहल अछि

सौंसे गाम पजरि रहल अछि

किछुए काल पहिने कोनो छौड़ा केर
पेटक जुन्ना सँ बहराएल लुत्ती
सुनगा गेल छैक जठराग्नि ग्राम देवता केर
आ ओ आब गीड़ि रहल अछि
बीछि-बीछि कें
भ्रूण शिशु आ नवतुरिया कें

सौंसे गाम पजरि रहल अछि
किछुए काल पहिने नियोजनालय केंद्र सँ घुरल
हताश तरुण सभक डिग्री सँ विस्फुटित आक्रोश
उड़ा गेल छैक--व्यवस्था आ विश्वासक प्रासाद
अपनत्वक सभ आधार
भऽ रहल अछि जनतांत्रिक विडम्बना केर आहार

सौंसे गाम पजरि रहल अछि
ई पहिने बाढ़ि मे डूबल रहैत छल
आब दारु पीबि बान्ह पर सूतल रहैत अछि
करैत अछि भूगर्भ सँ अन्तरिक्ष धरिक यात्रा
लऽ कें कनेक बेसी हिरोइनक मात्रा
विस्मृत करऽक लेल मिथ्या मूल्य-गौरब
निर्मित करैत अछि नित नवीन रौरब

माटि पानि, सितम्बर 1984

फेकल पात मे अन्नपूर्णा कें जोहैत विष्णुप्रिया

चान पहिने उद्दीप्त करैत छल
भाव-विभोर भs जाइत छलहुँ
रानी घाट सँ बाँस घाट धरि
नौका-विहार करैत
मुग्ध भए
अज्ञात लोक में पहुँचि जाइत छलहुँ

कालिदास, विद्यापति, खैयाम, टैगोर आ पंत कें पढ़ैत
जुहू आ मेरीना कें लिखैत प्रेम-पत्र
नाओ पर बीत जाइत छल
सौंसे सत्र
मृत्यु-भय नहि जगबैत छल
श्मशानी वैराग्य
आरोहण छल लक्ष्य, देह मात्र छल साध्य

जहिया सँ उगs लागल हुगली सँ चान
चिमनी केर धूआं केर सत्यक भेल ज्ञान
बूझs आबs लागल
कुम्भीपाक मे जिबैत मनुक्ख कें
कियैक प्रशस्त बुझाइत छैक
मगरमच्छक फूजल मूँह
आ अपने फँसि गेलाक बाद
ओ कियैक रचs लागैत अछि
दोसराक लेल व्यूह
कोना चेतना पर करैत छैक प्रहार
ठहाठही इजोरिया मे चमकैत अन्हार

स्पष्ट होमs लागल भोग आ भूखक अर्थ
एक्के बेर भs गेल सभ पूर्वानुभव व्यर्थ

करs लागलि आन्दोलित विचारमग्न क्रिया
दग्ध करs लगलीह
फेंकल पात मे अन्नपूर्णा कें जोहैत विष्णुप्रिया

माटि पानि, सित.'84

भिनसर सँ साँझ धरि समुद्रक ढेहु पर

भोरुकबो नहि उगल छलैक
होइतैक बाकिये एक पहर राति
कि ठेल देल गेल
नाइलोनक रस्सी सँ बान्हल
गोट तीसेक दू--फँकबा नाओ
· - समुद्रक ढेहु पर
अदृश्य भऽ गेल किछु काल मे
नाओक संग मलाह
अलमुनियमक बन्न डिब्बा मे भोजन आ पानि नेने

हम ओकरा सभक उगऽ आ घूरऽ क प्रतीक्षा मे
ठाढ़े छलहुँ
कि नहि जानि कखन उगि गेल सूर्य
आ भऽ गेल बेरियाँ
लागऽ लागल किनार पर भीड़
होबऽ लागल माछक मोल-भाव
तनऽ लागल वणिक्-भृकुटि, संभवतः
जनहत्थू मछबार सँ दाम सुनि
दुनू पक्ष भेल शान्त
उभयपक्ष-पोषित दलालक बात सुनि
उठऽ लागल हाथ
ससरऽ लागल पथिया-शोभित कैरियर वला
साइकिल समुद्रक काते-कात
हम बौक बनल रहि गेलहुँ ठाढ़
भिनसर सँ सांझ धरि
रहि गेलहुँ देखैत हिलकोर पर तूर जकाँ फुलकैत
पाँजक-पाँज फूल
अट्टहास मे डूबैत जहाजक मस्तूल

कर्णामृत, अक्टू.-दिस. 1986

इहागच्छ इहतिष्ठ

[महाकवि यात्रीक पचहत्तरिम जन्म दिवस पर]

एक नहि दू नहि
हजारक हजार
चढ़ैत रहैत अछि श्रद्धोष्ण धार
चानन-अक्षत आ फूल-बेल पात
पसरल रहैत अछि अपनेक चारुकात
होइत अछि भजन
कैल जाइत अछि आरती
जुड़ाइत रहैत छथि
बुभुक्षिता भारती

मुदा ई की
आवाहक लोकनिक
"इहागच्छ इहतिष्ठ"
सुनियो कें
सम्मुख-सन्नद्ध नहि भऽ रहल छियैक अपने
कतय चल गेल छियैक प्राण-प्रतिष्ठाक एहि बेर मे

कहिया धरि पद्मासन लगौने
बैसल रहताह श्रृत्विज
कहिया धरि होइत रहत
पूजा-अर्चा होम-जाप
कहिया धरि चुइत रहत
चुरु सँ शान्ति-जल

स्वस्तिवाचन आ षोड़शोपचारक एहिबेर मे
तऽ अपने कें
पाथर भए सभ किछु ग्रहण करबाक चाही
पंचामृत सँ स्नान कए (!)

पत्र-पुष्प धूप-दीप, अर्घ्य-नैवेद्य
आ द्रव्यक मारि धरि
चुप रहि सहन करबाक चाही

की भेल जँ रोटी आ दवाइ पर
लागल रहल प्रश्न चिह्न सभ दिन
की भेल जे यात्रा मे भेंटैत रहल कष्टे-कष्ट
आइ देश
साहित्यक मुकुट मे मणि जकाँ जड़ि कए
आ फोटो मे मढ़ि कए
चढ़ा तऽ रहल अछि
एक - सँ-एक भव्य लेखमाला
कऽ तऽ रहल अछि सुकीर्ति गायन !
एहुना केओ रुष्ट भेल अछि
पूर्णाहुतिक एहि बेर मे
स्वीकार कऽ लेल जाय
ई आनुष्ठानिक प्रणति
प्रसन्न भए
देल जाउ
सभकें सद्गति

चिनगी- 6,1987

एहि बेर ने बड़ु अइतैक बाढ़ि

एम्हरे तऽ घुरल छलहुँ
भूमिकम्प सँ ध्वस्त मेल भूभागक
हवाइ-दर्शन कऽ कें
कि लगले आबि गेलैक बाढ़ि
की फेर यात्रा करऽ पड़त
फेर जोहऽ पड़त महाविनाश आ दैवी प्रकोप सँ
त्राहि-त्राहि करैत
भूखल, नांगट, गृहविहीन, अस्वस्थ, शोक-संतप्त
लोककमांझ सहानुभूति देखएबाक लेल
गढ़ऽ पड़त
नव-नव शब्द
मंच कें छोड़ि कें जाइ पड़त उजड़ल-उपटल गाम
सुनऽ पड़त दुख दर्द
चूआबऽ पड़त घाम
लिअऽ पड़त सड़ाइनि-चिरिआइनि गन्ह मे सांस
दिअऽ पड़त पहिला सँ भरिगर आश्वासन
डँटऽ पड़त अफ़सर कें, करऽ पड़त भाषण

एहिबेर ने बरु अइतैक बाढ़ि
सलियाना कोटा कऽ देने छल पूर्ण
भूमिकम्पक दुर्लभ संयोग
कादो-पानि, रोग व्याधि सँ मुक्त
एहिबेरक यात्रा सँ कनियों के छलनि संतोष
धिया-पुतो मे आब नहि रहैत छैक
झलहेरि खेलऽक लेल बाढ़िक प्रतीक्षा
आने किछु रहलैक अछि
'रिलीफ कैंप' मे आकर्षण
वैह कन्ना-रोहटि, मरनी-हरनी
होइत रहैत छैक प्रत्येक साल

बाढ़ि सँ तऽ नीक भूमिकम्प
-नाव-जहाजक डूबक
-नम्हर रेल-दुर्घटना
जे बिनु मंगने देश विदेश सँ रिलीफ मे भेटि जाइत छैक
परिस्थिति कें देखैत दबल-डूबल कें
बहार कए,
अथवा
छोड़िकए
मुइलक संख्या कम बेसी भऽ जाइत छैक

मुदा बाढ़ि कें
प्रत्येक वर्ष अएबाक छैक, अबैत छैक
गाम-नगर डूबैत छैक
रोग पसरैत छैक
लोक मरैत छैक
लोक कें चाही सहानुभूतिक मात्रा
कऽ लेब एक बेर आओर हम यात्रा

वैदेही, नवम्बर, 1988

पंजाबक चिट्ठी

(1)
धांगल भऽ गेलिअउ माय

एहि गाम सँ ओहि गाम
एहि खेत सँ ओहि खेत
एहि घऽर सँ ओहि घऽर
करइत तीन मास काटलिअउ
मुदा ओहि दिन सरदारक फारम पर
गोली लागिये गेलउ

तोहर जितिया केर परताप जे मरलिअउ नहि माय
एक गोट टाडे. टा कटबऽ पड़लउ
मुदा कोना अइबउ हम तोहरा लऽग
हमर सातो जोड़ीदार तऽ मारल गेलउ

(2)
अस्पतालक बरण्डा मे पड़ल छिअउ माय
एतय बिहारी मजदूर कें खाट नहि भेटइ छइ
डागडर कहैत रहइ
तों छें बड़ भगगर जे एक्केटा टाड. गेलउ
नीकें भऽ रहल छें तों, एहि हप्ता छोड़ि देबउ
खर्च लए पांच सै रुपैया सरकार देतउ
हाथ आ तिनपहिया सँ नीक जकाँ चलि सकबें
अपन देश घुरि कें निचेन सँ रहि सकबें
बाज माय घुरि आबिअउ
कमबए आएल रहिअउ
टांगो गमा देलिअउ
तोहर लाठी छलिअउ
अपनहि लाठी धएलेलिअउ

(3)
आइ भिनसरे अस्पताल सँ निकालि देलकउ माय
पांच सै रुपैयो हाथ मे थम्हा देलकउ
केओ नहि पुछलकउ, कतय जइबें, कोना जइबें
'फारम' वला मालिक घुरियों कऽ नहि तकलकउ
एहि चौबटिया पर हमरा लेल कोनो बाट नहि छइ
मुदा हथिआरक कोनो बेपारी केर
गुदाम कातहि मे छइ
मोन होइए
ओकर पहरेदार सँ बतिअबिअउ
आ संयोग बैसि जाइ तऽ भीतर चल जइअइ
(4)
हमर सरदार बड़ दयालु छइ माय
काठक टाड. लगबा कए पगड़ी पहिरा देलकइ
डांड़ मे पिस्तौल बान्ही, पहरा पर लगा देलकइ
हमरा सँ आब पुलिसो डेराइत छइ
एतय जे अबइत छइ, घुरिकें नहि जाइत छइ
हमर लोक खेहारैत छइ
ओ सभ पड़ाइत छइ
(5)
तों सभ कोना छहीं माय
गौआँ सभ कोना छइ
महाजन केर लाठी की ओहिना बजरैत छइ
घऽर सभक छप्पर की ओहिना उजड़ैत छइ
काटल की जाइत छइ पाकल फसिल ओहिना
लूटल की जाइत छइ, बेटी-बहिन ओहिना

चिन्ता जुनि करिहें माय, गामहि मे हम रहबउ
आँखिक-पाँखि फुजि गेलइ
सब हक चिन्ता हरबउ

भाखा, जनवरी 1989

हम तऽ छी रिलीफजीवी कवि

छौंड़ा सभ झलहेरि खेलइए
हम बैसल एहि खिड़की पर सँ
दृश्य बाढ़ि केर देखि रहल छी

नहि चिन्ता छै ओकरा सभकें
बाप मचान कतए गाड़लकइ
माय कखन धरि चाउरक पातिल
अपन माथ पर धएने रहलइ
नूआ-केथड़ा, बकस-पौती
कोन गाछ पर टांगल गेलइ
वृद्ध पितामह कोना ऊघि कें
बान्हक ऊपर आनल गेलइ

ट्रांजिस्टर कए बरे कहलकइ
'हेलिकोप्टर' आबि रहल छइ
'पोलिथीन' मे बान्हल सतुआ, पूड़ी,
चूरा, 'ब्रेड' ससरेतइ
छौंड़ा सभ लूझत आ भागत
बाप-माय, दादा-दादी कें
जोहऽ केर चिन्ता मे लागत

किन्तु आहि रौ, ई की भेलइ
भिनसर सँ दुपहर भऽ गेलइ
तइयो ने हेलीकोप्टर एलइ
भूखल छौंड़ा कानऽ लागल
एतबे मे 'ट्रांजिस्टर' बाजल
मौसम बड़ खराब भऽ गेलइ
अजुका पाकिट काल्हि बंटएतइ
हम किछु पाकिट कें उठबइ छी

ऊपर सँ नीचाँ खसबइ छी
छौंड़ा सभ लूझऽ लगइए
भए कृतज्ञ हाथ जोड़इए

हम तऽ छी रिलीफ-जीवी कवि
लोक जनइए अछि उत्पाती
तें ने हमर छत कें बिसरइए
खसा दैत अछि
ब्रेड, किरासिन
चाहक पत्ती, माचिस, चिन्नी
दूधक पाउडर
हमर ब्रैंड सिकरेटक डिब्बी
कैंप घूरि कए फोन करइए आओर की सभ चाही कवि जी
इंगलिश दारू भेटि ने रहलइए
तें देसी ठर्रा खसबइ छी

हमरा मुँह सँ बहराइत अछि
बाढ़िक अएने हम प्रसन्न छी
ऊपर सँ सभ भेटि जाइत अछि
नीचाँ केर चिन्ता ने करइ छी
कविता भूखल मारि रहलि छलि
पत्रकारिता सँ जीवइ छी

मि. मि., नवम्बर 1988

सहरसा

स्वर्ग जयबा सँ पूर्व
श्रीमती गांधी गेल छलीह सहरसा
देखि आएल छलीह
प्रभाव-सृष्टिक लेल सत्ताक संकेत पर
कोना नचाओल जाइत अछि कोशी
तटबन्ध कें तोड़बाकए
कोना बाँटल जाइत अछि बेहोसी
कोना जान-मालक सड. लोकक भासैत छैक डीह
कोना कोदारि पाड़ऽ बला हाथ
माड.ऽ लागैत अछि भीख
दृश्य देखिकें ओ कनेक पोछने छलीह आँखिक कोर
पछाति सौंसे सरकारी महाल बहबऽ लागल छल नोर
बेस किछु दिन उमड़ैत रहल छल
चिन्ता आ सहानुभूतिक मेघ,
उड़ैत रहल छल 'रिलीफ'
बरसैत रहल छल नेह

आब ओहि सहरसा मे
पड़ि रहल छैक रौदी केर मारि
फेर हेरऽ लागल छैक हेलीकोप्टर कें
नांगट-उघार देह आ चर-चाँचरक दराड़ि
उत्सव-प्रिय अफसरक होमऽ लागल छैक प्रतीक्षा
हाथ पसरि गेल छैक माड.ऽ लेल भिक्षा
कान्ह पर टंगा गेल अछि वीडियो कैमरा
उत्तेजक शब्दक सड. ठाढ़ अछि मीडिया
ठनकैत अछि अनुग्रह-राशि
ठुनकैत अछि हेराफेरी
नहि जानि दिल्ली कियैक कऽ रहल अछि देरी

कोसी कुसुम, मार्च '85

कौआ - 1

कौआ बूझि-गेल अछि
खेतक मांझ मे जे अछि ठाढ़
नहि थिक किसान वा रखबार

ओकर पैना बला हाथ
ककरो पर उठि नहि सकैत छैक
कोट, पैंट, टोपी पहिरि
एहि काठक बौना कें
भय आ भ्रम उत्पन्न करऽक लेल
एहिना ठाढ़ रहऽक छैक
जाधरि फसिल नहि कटि जाय
निर्भय निरातंक कौआ
ओकर माथ पर बैसि
पांखि खजुआबैत अछि
चोंच पिजबैत अछि
फूल चोंचिआबैत अछि
आ फऽड़ तोड़ि कए
उड़ि जाइत अछि

हालचाल, अक्टूबर '86

कौआ - 2

कौआ आबि कए बैसल अछि मुड़ेर पर
कनेक उठि कए पुछतियैक
-केहन रहल भिनसुरकी रातिक आनन्दोत्सव
-केहन रहल प्रभातफेरी
-केहन रहल दूर-दूर धरि अनेरे उड़ब
-केहन लागल बगुला, पेंगुइन
आ हैंजक-हैंज समुद्री चिड़ैक सङ.
खेलब गैंचा-गैंची

कौआ कोनो दोसर मुड़ेर पर जा कें कुचरै
ताहि सँ पहिने कनेक उठि कए पुछतियैक
कोना पड़ाएल छलह ओहि दिन
'बेअन्त' आ 'सतबन्त'क
पिस्तौलक आवाज सुनि
कतेक दूर धरि
पांजर पर प्रहार करैत रहल छलह प्राण
अधरतिया मे ऊर्ध्वश्वास लैत
आ श्मशान बनैत भोपाल
की करौने छलह भान
'मिथाइल आइसो साइनेट' सँ
कोना भेटल छलह त्राण

कौआ आबि कए बैसल अछि मुड़ेर पर
कनेक उठि कए पुछतियैक

हालचाल, अक्टू. '86

चन्द्रभागा आ मिथिला

ई चन्द्रभागा नदी अछि
जे शास्त्र आ धर्मतीर्थ मे रहितहुँ
नहि अछि उत्कल मे
जेना मिथिला
पुराण आ इतिहास मे रहितहुँ
मिथिला मे नहि अछि

चन्द्रभागा आ मिथिला
दुनू केर पानि आ माटि
अदृश्य-अलोप भऽ गेल छैक
रहि गेल छैक दुनू केर शुद्ध आत्मा
विशुद्ध शास्त्रीय आ शास्त्रार्थक विषय

हम दुनू कें कहिया सँ जोहि रहल छी
नहि जानि कहिया धरि जोहैत रहब
पार्थिव शरीरक निर्धारण लेल
नहि जानि कहिया धरि
चन्द्रभागा मे मिथिला
आ मिथिला मे चन्द्रभाग कें रोपैत रहब

ओना
हमरा ई बूझल अछि
मैत्रेय वन आ जनकपुर
सभ दिन एकात्म रहि भूगोलक
अतिक्रमण कऽ गेल छल
आ पुण्यतोया चन्द्रभागा
एवं मैथिल कन्या सीता केर
प्रत्याख्यान भऽ गेल छल
मुदा तकर ई अर्थ तऽ नहि जे

चन्द्रभागा कें कलिंग सागर मे
छोड़ि देल जाय
आ मिथिला कें स्मृति-कारा
दऽ देल जाय

लोकवेद, नवम्बर 1986

हुनका ई बूझल छनि

हुनका ई बूझल छनि
सत्य मात्र वैह छथि
शेष जगत् मिथ्या
आंगुरि पर नचबैत अछि
सौंसे ब्रह्माण्ड कें
हुनके बुद्धि नित्या

हुनका लेल सत्य थिक
बारूद
अणु-आयुध
प्रक्षेपास्त्र
संहारक पिण्ड
सैन्य शक्ति
वैभव सँ जागल उन्माद भीति
सभ कें लड़ाबऽ बला युद्धनीति

शान्ति-स्थापनक लेल
ओ जगबैत छथि
वर्णभेद
वर्गभेद
रंगभेद
क्षेत्रभेद
धर्मभेद
भूगर्भ-भूतल-आकाश भेद

बनाबऽ लेल 'तेसर (!) विश्व'कें
तृतीय महायुद्ध क्षेत्र
फूजल रहैत छनि हुनक तीनू नेत्र

मिथिला सौरभ, 1986

भिनसर भऽ गेल अछि

भिनसर भऽ गेल अछि
टेबुल पर राखल अछि
चाह आ अखबार
आओर दिन जकँा आइयो बड़ी काल सँ
कौआ कठफोड़बा माल आ कूकुर
कैने अछि दिशा कें निनादित
आइयो सूर्यक लालिमा कुहेस कें
नहि चीरि सकल
आ लगले भऽ गेल सौंसे सरड़. धुँआह

बासन केर खनखनाएब
गृहस्वामिनी केर गरमाएब
भऽ गेल अछि आरम्भ
बजरऽ लागल अछि कऽल पर डोल
भरऽ लागल अछि 'टब'
मधुमेहिया सभ शुरू कऽ देने अछि घूमब

ओहिना सभ बात
नियमित, स्थिर, घटनारहित आ स्वाभाविक अछि
अखबारक पन्ना मे आइयो अछि
हत्या, अपचालन, बलात्कार, साम्प्रदायिक
भिड़न्त वर्तमान

ओहिना किछु कालक बाद
हम भऽ जायब बहार
सड़कक भीड़ देखि लगाएब
जनसंख्या वृद्धिक अन्दाज
टी.वी., टेलेक्स आ मालिकक बी. पी. देखि
करब काज

काँच मालक बढ़ैत दाम
आ तैयार वस्तु पर
सक्कत होइत सरकारी लगाम
हैत हमर चिन्ताक कारण
अपन त्रिशंकु अस्तित्व बिसरि
भरि दिन करैत रहब
कौटिल्य संभाषण
आ ओहिना बीत जायत एक आओर दिन

आजुक कविता '84

एहि अन्ध गुफा मे

एहि अन्ध गुफा मे
पहिल सुरड. सँ भऽ कए
दोसर सुरड. बहरायल छैक
दोसर सँ तेसर
तेसर सँ चारिम ... ...

लक्षाधिक सुरड. बला एहि गुफा केर
प्रत्येक सुरड. पर बैसल छैक
विधुत्जिह्व वज्रदन्त विडालाक्ष

ओ दबाड़ि रहल अछि
आ हम पड़ा रहल छी
उत्तर सँ दक्षिण
नदी सँ पहाड़
समुद्र-तल सँ ग्रह-उपग्रह धरि
सभ तरि प्रज्वलित भऽ रहल अछि ओकर अग्नि-चक्षु
सभ तरि प्रक्षेपित भऽ रहल अछि ओकर यंत्र-व्यूह

ई कहियो नहि टूटऽ बला मूर्छा
छीनऽ लेल हमर अंतिम सांस
ठाढ़ कऽ देने अछि सभ दिस अपन मृत्युदूत
जे छेकने अछि सभ बाट

हम कहिया सँ दूगोट सुरंगक मध्य
लौह-पिण्ड जकँा गलि रहल छी
ओकर विवेक-शून्य संकेत पर विविध रूपाकार मे ढरि रहल छी

'आजुक कविता '84

पहिने एकटा गाम होइत छल

पहिने एक टा गाम होइत छल
आ ओहिमे एकटा गोनू झा रहैत छलाह
गाम आ गोनू कें दुनू बताह बूझऽक लेल
अरोस-परोसक गाम मे
किछु लोकक होयब आवश्यक होइत छल

गाम आ गोनू एक-दोसर कें बताह कहि-बूझि
बहुत रास पाथर फेंकऽ बला लोक कें जुटा लेने छलाह
फल ई भेल जे भड़ैतक संख्या बढ़ि गेल
आ गाम पाथर सँ भरि गेल

ओ पाथर
खेतक आड़ि, टोलक छोर आ गामक सिमान सँ होइत
पहुँचि गेल आंगन आ घर मे
ठाढ़ होम लागल देबार सलगाक तऽर मे
आब लोक देबारक अहि पार आकि ओहि पार
रहैत अछि
केओ ककरो नहि चिन्हैत अछि
सभ अपना-अपना लेल बनबैत अछि ससरफानी
आ ओहि सँ लटकि कऽ मरैत अछि

'बसात', जन. 1986

की अहाँ समुद्र देखने छी

की अहाँ समुद्र देखने छी
केहन होइत अछि ओ

हम तऽ नाओ बनबैत छी
जाल बीनैत छी
अधरतिया सँ दुपहर धरि
देहु पर
उठैत-बजरैत
उनटैत-डूबैत
माँछ फँसबैत छी

सांझ पड़ैत अछि
'सारा' (ठर्रा) पीबैत छी
गन्टलू-रागी (मडुआ-कौनी) खाइत छी
आ सूति रहैत छी
सपनो मे माँछ कें छोड़ि
किछु नहि देखैत छी

अहाँ की देखने छी समुद्र
केहन होइत अछि ओ

1986

जल-मोर्चा

नदी आब समुद्र लग नहि जाओत
करत अपने क्षेत्रक विस्तार
तोड़त सीमावर्ती बान्ह
पाटत घाट आ किनार
सिद्ध करत जलाधार
के कहिया गढ़ने छल परिभाषा
निर्धारित कैने छल सिमान
बँाटने छल अधिकार

प्रकृति आ मुनक्खक केहन छल दुरभि-सन्धि
हजार-हजार वर्षक बादो
नदी रहि गेल क्षुद्र
रत्नाकर कहबैत अछि समुद्र

दोहन-शोषण पीड़न-प्रतारण
सभ करैत अछि नदी सहन
करऽक लेल समुद्रक उदर-भरण
करऽक लेल हमर उपहास
करैत अछि समुद्र
गर्जन आ अट्टहास
गीड़ैत मणि-मुक्ता सुनैत स्तवन
उगलैत रहैत अछि ओ सितुआ आ शंख
बजबैत रहैत अछि प्रभुता केर डंक

नदी आब समुद्र लग नहि जाओत
हैत नहि उदरायत्त
सुनत नहि गर्जन आ अट्टास
बान्ह तोड़ि करत अपन क्षेत्रक विस्तार

1988

मिथिला मे बरफ नहि जमैत अछि

मिथिला मे बरफ नहि जमैत अछि
आ ने युकिलिप्टस उगैत अछि
आम-लिच्ची-कटहड़ आकि फूलपात पर
जाड़क राति मे ओस सघनाइत अछि
आ भिनसर होइतहि निपत्ता भऽ जाइत अछि

बाध-बोन चऽड़-चाँचड़ मे जमल कुहेस
धूआँ आ गैसक सड.
भऽ जाइत अछि गगनचारी
एतय रहि जाइत अछि नचारी

नचारी गाबैत लोक
अपनहि भऽ जाइत अछि बरफ
आ करेज पर
उगा लैत अछि युकिलिप्टस

कर्णामृत, अक्टूबर-दिसम्बर, 1989

माटि-पानिक कवि

जाहिया सँ हुनका
अपन माटि-पानिक कवि
कहएबाक जागल छनि सौख
चान इजोरिया बेली कनेर
सभ कें बिसरि
मकइ मडुआ धान पर लिखैत छथि
पहिने सौन्दर्य-बोध-ग्रस्त छलाह
आब यथार्थ-बोध त्रस्त छथि

कर्णामृत, अक्टू.-दिस. 1989

जागल अछि

जागल अछि निन्न
जागल अछि भूख
जागल अछि चालनि
जागल अछि सूप

जागल अछि विष्टी
जागल अछि सूट
जागल अछि डण्टा
जागल अछि बूट

जागल अछि घरिआर
जागल अछि जोंक
जागल अछि लीडर
जागल अछि नोट

कर्णामृत, अक्टू-दिस. 1989

हे हमर सखा

हे हमर सखा
अहाँकें की मोन अछि
जहिया अहाँ हमरा
गाम सँ बिदा कैने छलहुँ
हमर साँस, नाड़ी आ हृदय
चलि रहल छल
कि नहि

फूजि गेल गाड़ी सँ
आँखि सँ बहैत नोर
आ डोलैत हाथ देखि
हमर आँखि आ हाथ
काँपल छल कि नहि
ओना हमरा अछि विश्वास
जीविते अवस्था मे
अहाँ देने हैब बढ़ऽ
सिमरिया सँ आगू

कर्णामृत, अक्टू.-दिस. 1989

नव वर्ष

प्रत्येक वर्षक अन्त मे
हम अपना कें पाबैत ठाढ़
कोनो अज्ञात गेटक सम्मुख
जे नव वर्षक साइरन सुनितहिं
फुजि जाइत अछि
आ धूरा बनि, धूआँ बनि, गैस बनि
हमर चारू दिस पसरि जाइत अछि

हम कखनहुँ अपन कडुआएल आँखि
आ कखनहुँ माँतल माथ कें मसोड़ैत
आक्रोश मे, तामस मे
जोर सँ चिचिआइत छी
हटा लिअऽ ई धूआँ
ई आगि, ई दाह
जे हमरा पचास वर्ष सँ
कऽ रहल अछि
धूम्राच्छन्न
दग्ध आ सुड्डाह

मुदा के सुनैत अछि
हमर गर्जन आ चीत्कार
धुँआइत रहैत अछि दिशाकाश
हम शीतलताक प्रतीक्षा मे
फेर ऊघऽ लगैत छी
एकटा आओर
तीन सय पैंसठि
पयर वला
अजोध वर्ष

कर्णामृत, जन- मार्च, 199

कुकूर

कतऽ जा रहल छह एहि सेठ-शावक सङ. बाउ
एखन नहि कैने हैबह एक्को मास पूर
सभ सँ छोड़ा कें
लऽ जा रहल छह
ई कसाइ
नहि जानि कतेक दूर

तों कीनल गेल हैबह पोसऽक लेल
की जानऽ गेलह
देखौआ सिनेह आ दुलार मे
आ कतेक छल होइत छैक
कोर मे बैसाकए चमौटी पहिरावऽ बला हाथ मे
गरदनि मरोड़ऽ केर
कतेक बल होइत छैक

नहि जानि कोन टीसन पर
तोहर ई सौखिया बाप
लऽ कए उतरि जयतह
साबुन सँ नहौतह
दूध पिऔतह
बिस्कुट कें हवा मे फेंकि
मुँह सँ लोकऽक लेल
तोहरा कुदकौतह

किछुए दिन मे तों सीख लेबह
भूकब आ सूँघब
फेंकल कें लूझब
अनका कें काटब
अपना कें चाटब

मालिक कें करैत
संभावित खतराक प्रति सचेत
अपने रहबह भरि जिनगी हकमैत
आ
कहियो बिजुरीक छड़ी सँ सटिया
तो देल जयबह नगरपालिकाक गाड़ी मे चढ़ा
नहि-नहि, कोंकिया जुनि तों
चमौटी सँ गेल छह मूड़ बहरा
गाड़ी एखन सीटियो नहि देलकैक अछि
चुपचाप उतरि जाह
हम रहबह ठाढ़
गेटक हैण्डिल पकड़ने
जा धरि लेबह नहि धऽ
अपन घरक बाट

1989

अनेरे ढाही लैत

अनेरे ढाही लैत
एक जजाति कें धाडि. कए दोसर पर लपकैत
एक गोट छुट्टा साँढ़क सम्मुख
पड़ि गेल छलहुँ ओहि दिन अकस्मात्

ओ सीड. पर उठा कए दिअऽ लागल पटकनिया
आ हम ओकर मूड़ पर छटपटाइत
अपन दिवंगत होइत आत्माक लेल
करऽ लगलहुँ
शान्ति-कामना

किछु कालक बाद
पटकि कए नीचाँ ओ बैसि गेल सटि कऽ
आ हँसोथऽ लागल थुथून सँ सौंसे देह
अपरिचित किन्तु करुणामय स्पर्श पाबि
भयाक्रान्त रहितहुँ
हम भऽ गेलहुँ विचारमग्न
ई साँढ़ थिक, की नन्दी, की महादेव

अहुना केओ लाठी आ ढेप चलबैत अछि
बाजल ओ साँढ़
हाँफि आ हूलि कए
दू गाल खेत महक हरिअरी
आ कि टाट परक लत्ती कें नोचि कए,
हम अहाँ के कैलहुँ सावधान
किन्तु अहाँ हमरा शासन मे आनऽक लेल
जोहऽ लगलहुँ संवैधानिक प्रावधान
हम तऽ छी दागलाक बादो सन्तुष्ट
अहाँ कियैक भऽ गेलहुँ

दू-चारियें पटकनिया सँ रूष्ट
टिड्ढ़ी, कीट, मूसक विरुद्ध
अहाँ करबा चुकल छी प्रस्ताव पारित
आब कऽ सकैत छी हमरो कृत्य
विधानसभा वा संसद मे उद्घाटित
जारी करबा सकैत छी
साँढ़-नियंत्रण अध्यादेश
गिरफ्तारीक लेल
राष्ट्र-व्यापी आदेश
मुदा पंचायत सँ पार्लियामेंट धरि
चलत नहि हमरा बिना काज
सभतरि हमरे अछि राज

पहिने छलहुँ आतंकित
आब छी चिन्ता मे
सुरक्षाक लेल शासन कें गोहारी
आ कि साँढ़ लऽग रही
पड़ल छी छगुन्ता मे

'भाखा' जुलाइ-अगस्त, 89

अजात शिशुक नाम

नीक हो जँ अहाँक जन्म नहि होअए
गर्भहि सँ कऽ देल जाय विदा
नहि देखू ओ संसार
जकर हम कऽ रहल छी निर्माण
अहाँक लेल
नहि लऽ सकू साँस
ओहि हवा मे
जकरा हम बना देने छी विषाक्त
नहि चलि सकू ओहि रस्ता पर
जकर दू-बगली
हम गाड़ि देने छी बारूदक झाड़

के देत स्नेह-स्पर्श
के करत दुलार
एहि विनाश-गृह मे तऽ हम कऽ रहल छी
घृणा-हिंसा केर बेपार

मि.मि. अक्टूबर (द्वि) '87

महायात्रा

अगिला सीट पर
जकर गर्दनि रेतल गेलैक
ओ हमर बाप छल

गोली खाकें नीचाँ खसऽ वाली
हमर माय छलि

पिस्तौल वला हाथ सँ संघर्ष करैत
जे भूमिसात् भेल छल
ओ हम छलहुँ

हम अपन माय-बाप कें
तीर्थ-यात्रा तऽ नहि करा सकलहुँ
मुदा ओ
भरल बस मे
हमरा तीनू कें
महायात्रा करा देलक

मि.मि., अक्टूबर (द्वि) '87

रोलर

खाधि मे माटि
माटि पर रोड़ा
रोड़ा पर रोलर
रोलर पर डण्डा
डण्डा पर फहरैत
रोज नव झण्डा
झण्डा तर सोजहा
गामक सभ रोजहा
लगबए नारा
हैज्जो मारा

जोर लगाबह भइया
बिनु धकिऔने अगुअइतह नहि
जंग लगलका पाहिया

तेल पियाबह
पेंच घुमाबह
ठेलि-ठेलि कऽ एहि रोलर कें
सौसे गामक सैर कराबह

एहि बण्डिल मे फन्ना-पोस्टर
ओहि कागत पर नारा
बढ़ल चलल जा ओम्हरे-ओम्हर
जेम्हर जाइछ हरकारा
कुम्भकरण छओ मास सुतइ छल
गामक निन्न पंचबरखा
एकरा जगबऽ रजधानी सँ
एतइ बड़का-बड़का

मारह धक्का बाबू
चाउर भेटतह
चिन्नी भेटतह
भेटतह सस्ता दारु

के उजड़ल के बसल मरल के
के गड़कल के भरल बनल के
के हारल के जप्त करौलक
के जीतल के गद्दी पौलक

छोड़ह चिन्ता बौआ
हम मजदूर बिकौआ
बस चुनाव धरि कतिका कटतइ
सुनिलह पूत कमौआ

बेटा जोर लगाबह
सुग्गा धक्का मारह
ठेलि-टानिकऽ एहि 'रोलर' कें
यमुना पार कराबह

वैदेही, नवम्बर 1989

कवि कम्प्यूटर पर

पहिने हम
उछलि कए
कूदि कए
एक डारि पर सँ दोसर पर फानि कए
कविता सुनवैत छलहुँ
आम -लताम जकाँ शब्द कें
तोड़िकए
लोक पर फेंकैत छलहुँ
दर्शक छल आन्हर
श्रोता बहीर
ताली देबैया केर लागैत छल भीड़

फेर हम जिंजीर सँ बान्हल गेलहुँ
कविता सुनाबऽक लेल
शहर मे आनल गेलहुँ
मदारीक संकेत पर जखन करऽ लगलहुँ
काव्य-पाठ
रस-सिद्ध मानल गेलहुँ

भेटल एक आओर मोड़
बैसा कें घोड़ाकेर
ऊंट केर
हाथी केर
पीठ पर डरकस मे
कविता सुनबाबऽ जाइ लागल हमरा सँ
सर्कस मे
देखि अपन सामन्त-छवि
मुग्ध भेल हमर कवि
ई सभ छल देखि रहल कम्प्यूटर

स्मृति-बद्ध निर्देश पर
मशीनक भाषा मे काव्य-सृष्टि करबऽ लागल
भावना, अलौकिक
चेतना 'इलेक्ट्रानिक'
'फ्लॉपी' डिस्क कृतित्व सँ भरऽ लागल
कृत्रिम बुद्धिमत्ता- प्रखर
'रोबोटिक' व्यक्तित्व चमकऽ लागल

कवि सँ भऽ गेल छी
संवेदनशील यंत्र
'सी. पी. यू.' पर जपैत छी
'ॐ शान्तिः'क मंत्र

वैदेही दिसम्बर '1990

एहि लेसल शरीर कें

पसरल अछि निस्तब्धता
एहि पार सँ ओहि पार धरि
ने पातक दोग सँ सनसनाइत अछि हवा
ने गाछ पर बैसलि
कोइली कुहकैत अछि
ने ओस सँ तीतल
दूभि केर सिहरैत छैक गात
ने डोलैत छैक पुरइनक पात
किन्तु एहन निभोर रातियो मे
बाजैत अछि साइरन

दऽ जाइत अछि कोनो आसन्न अशुभक सूचना
मसानी विलाप वला लय मे
आ संगहि छूअऽ लगैत अछि
भोपाल आ चरनैलक गैसयुक्त हवा

कडुआइत अछि आँखि
सूखैत अछि कण्ठ
आ खाट पर उठिकें बैसऽ सँ पहिने
जकड़ि जाइत अछि सौंसे शरीर

एहि धूँआ मे तऽ किछुओ नहि सूझैत अछि
कोना भागी
ककरा छोड़ी
ककरा टाँगी
एहि धाह आ लेसल शरीर कें
बारूदक कोन ढेरी लग पहुँचा दी.

मि.मि., मई 1987

मित्रक पत्र

लिखलन्हि डॉ. गंगेश गुंजन
ओहिठाम त ओहिना अनगनती कविता
उधिआइत-ढेहुआइत
आ यात्रीजी जकाँ एहि छोर सँ ओहि छोर धरि
रहैत छैक बौआइत
कीर्ति भाइ
तौं कियैक लेलह गुमकी लादि
घर-संसार धियापुता, ऑफिस-फाइल मे डूबल रहि
की करबह जीवकान्त
की कहथुन डाक्टर श्री जयकान्त

काव्य-हत्या छैक अपराध
कहैत रहथि मोहन भारद्वाज
आलोचक-प्रवर रमानन्द रमणोक छनि सैह मत
कवि जँ नहि भऽ सकय सुमन-व्यास, आरसी-अमर ओकरा ऊघऽक चाही
मायानन्द-मार्कण्डेय प्रवासीवला पौराणिक बस्ता
अथवा धऽ लेबाक चाही
कवि-शोधन कुलानन्द मिश्र-रामानन्द रेणुवला रस्ता
अदन्त केदार कानन
एवं अल्पदन्त राजमोहन जकाँ
नुकाकें कविताक हाट मे प्रवेश करब
मानैत छथि अनुचित
दन्तहीन सुधांशु शेखर चौधरी

भाइ, ओना तोहरा वीरेन्द्र जकाँ नहि लिखनहुँ
अथवा धीरेन्द्र जकाँ लिखनहुँ
सभ किछु जहिना छैक तहिना रहतैक
यथास्थान रहताज हंसराज
टस-सँ मस नहि हैताह प्रभास

कोशी-गंडक जकाँ बहैत रहताह सुकान्त-सुभाष
मंत्रेश्वरी खाधि
वा भीमनाथी नादि
मे आकंठ डूबल रहताह उदय चन्द्र विनोद-विभूति आनन्द
बहबैत रहताह हाशिमी, प्रदीप बिहारी
दक्षिणाहा बसात
करैत रहतीह इलारानी-विभारानी
कविता मे कथा आ कथा मे कविता केर बात

भाइ,
मिथिलो मे फुलाइत छैक रामलोचनी अग्निपुष्प
शरदेन्दु शेफालिका
भेटैत छैक जीवकान्ती एकान्त
पूर्णेन्दु महाप्रकाश
तखन अहाँ कियैक छी अनेरे सेबने दक्षिणारण्य
लेखन आ जीविकाक मांझ बनल छी त्रिशंकु
ने लिखैत छी कविता
आ ने पठबैत छी मनिआर्डर
गोड़ लगैत छी
हम अहाँ कें सादर

मि. मि., मार्च, 1989